भारत की दार्शनकि प्रवृत्तयिाँ

भारत में पहली शताब्दी से पूर्व ही 6 आस्तकि व 3 नास्तकि दार्शनकि मतों का प्रतपिादन हो चुका था।

प्राचीन भौतकि दर्शन	प्रणेता
उच्छेदवाद	अजति केश कम्बलनि
अक्रयिावादी	पूरण कश्यप
नत्यिवादी	पकुद कच्चायन
नयितविादी	मक्खलि गोशाल
अनशि्चयवादी	संजय वेलट्पुत्त

- आस्तकि मत को षडांग दर्शन सदि्धांत कहते हैं जसिमें सांख्य, योग, न्याय, वैशेषकि, मीमांसा और वेदांत शामलि हैं।
- नास्तकि मत में बौद्ध, जैन तथा चार्वाक प्रमुख हैं, इसे भौतकितावादी दर्शन भी कहते हैं।

सांख्य

- कपलि मुनि द्वारा प्रवर्तति इस दर्शन को भारत का प्राचीनतम दर्शन माना जाता है।
- इनकी रचना है- तत्त्व समास।
- बाद के आचार्यों में ईश्वरकृष्ण प्रमुख हैं और उनका ग्रंथ 'सांख्यकारकिा' प्रसदि्ध है।
- इसमें सत्कार्यवाद, वकिासवाद तथा भौतकिता के साथ-साथ संख्या आधारति आध्यात्मकिता और वैज्ञानकिता प्रसदि्ध है।

योग दर्शन

- इसके प्रणेता पतंजलि हैं जन्होंने 'योगसूत्र' नामक ग्रंथ की रचना की।
- ज्ञानेन्द्रयिों और कर्मेन्द्रयिों का नग्रिह, योगमार्ग का मूलाधार है।
- भारत के इस दर्शन की महत्ता ऐसी रही कि वर्तमान दौर में यू.एन.ओ. द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दविस घोषति कयिा गया है।

न्याय

- न्याय-दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम माने जाते हैं, जनिका ग्रंथ 'न्यायसूत्र' इस दार्शनकि प्रवृत्ति का पहला ग्रंथ माना जाता है।
- 12वीं सदी में न्याय दर्शन को नया रूप गंगेश उपाध्याय ने अपने ग्रंथ 'तत्त्व चतिामणि' में दयिा।
- इस दर्शन में तर्क और प्रमाण के प्रयोग का महत्त्व प्रतपिादति हुआ है।

वैशेषकि

- इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं जन्होंने 'कणाद-सूत्र' रचा।
- इन्होंने द्रव्य अर्थात् भौतकि तत्त्वों का ववि‍चन करते हुए परमाणुवाद की स्थापना की।

मीमांसा

- कर्मकांड, यज्ञ आधारति इस दर्शन के प्रतपिादन में आचार्य जैमनिी का नाम अग्रगण्य है।
- मीमांसा के अनुसार वेदों में कही गई बातें सदा सत्य हैं।
- यह पुरोहतिवाद, बाह्य आडंबर को बढ़ावा देने वाला दर्शन है।

वेदांत

- ईसा-पूर्व दूसरी सदी में संकलित बादरायण का ब्रह्मसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहते हैं।
- बाद में इस पर दो प्रख्यात भाष्य शंकराचार्य (9वीं सदी) और रामानुज (12वीं सदी) द्वारा लिखे गए।

वेदांत आधारित अन्य दार्शनिक मत

भाष्यकार	वाद	भाष्य
शंकराचार्य (8–9वीं सदी)	अद्वैतवाद	शंकरभाष्य
रामानुजाचार्य (11–12वीं सदी)	विशिष्टाद्वैतवाद	श्रीभाष्य
मध्वाचार्य (13–14वीं सदी)	द्वैतवाद	पूर्णप्रज्ञभाष्य
वल्लभाचार्य (15–16वीं सदी)	शुद्धाद्वैतवाद	अणुभाष्य
निम्बार्काचार्य (13वीं सदी)	भेदाभेदवाद	वेदांत परिजात सौरभ

- ज्ञान आधारित इस दर्शन की पृष्ठभूमि में उपनिषद् था और ब्राह्मण-हिन्दू धर्म का अधिकांश दार्शनिक मतवाद इसी वेदांत दर्शन से प्रभावित-प्रेरित रहा है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/philosophical-trends-of-india